—ऋषिपुत्रविरचितं—

निमित्तशास्त्रम् ।

प्रकाशक,

वर्धमान पार्श्वनाथ शास्त्री

सोलापुर

महर्षिऋषिपुत्रविरचितं

निमित्त-शास्त्रम् ।

— अनुवादक —

धर्मरत्न पं. लालारामजी शास्त्री

-- संपादक व प्रकाशक --

वर्धमान पार्श्वनाथ शास्त्री
(विद्यावाचस्पति)
संपादक—जैनबोधक—सोलापुर

श्री कल्याण पावर प्रिंटिंग प्रेस सोलापुर.

प्रति ५०० | वीर सं. २४६७ सन् १९४१ | मूल्य छह आना

दो शब्द ।

संसारमें होनेवाले हानिलाभ, सुखदुःख आदि सर्व बातें कर्मकी गतिपर अवलंबित है। इस मनुष्यने पूर्वमे जिस प्रकार शुभ या अशुभ संचित किया हो उसी प्रकार उसे फल भोगना पडता है। उसका अनुभव उसे सुख या दुःखके रूपमें होता है। कर्म किस समय उदयमें आकर क्या फल देता है, इसे विशिष्ट ज्ञानी अपने क्षयोपशमविशिष्ट ज्ञानके द्वारा जान सकते है। परंतु सामान्य बोधवाले उसे नही जान सकते है। अतएव महर्षियोंने बाह्यनिमित्तोंको देखकर आगे होनेवाले (भवितव्य) विषयको समझनेके लिए अपने दिव्यज्ञान द्वारा निमित्तशास्त्रकी रचना की है। यदि मनुष्य सूक्ष्मदृष्टिसे इन निमित्तोंका निरीक्षण कर उनके फलपर विचार करे तो अवश्य व्यवहारनिपुण व परमार्थकुशल हो सकता है। प्रकृतग्रंथमे उसी विषयका प्रतिपादन है।

जिनाचार्योंके द्वारा निर्मित वैद्यक, ज्योतिष विषयक ग्रंथ जिसप्रकार अत्यंत महत्वपूर्ण है उसी प्रकार निमित्त व शकुन शास्त्र भी खास उल्लेखनीय हैं। परंतु उनके प्रकाशनकी ओर हमारे धर्मबंधुओंका लक्ष्य नहीं है।

प्रकृतग्रंथके कर्ता मुनिराज ऋषिपुत्र है। इसके सिवाय हमें उनका अधिकपरिचय नहीं मिल सका। इसलिए हम पाठकोंके सामने उपस्थित नहीं कर सके। इसकी हिंदी टीका श्रीधर्मरत्न पं. लालारामजी शास्त्रीने कर देनेकी कृपा की है। अतः उनके हम आभारी है। अधिक प्रतियां न मिल सकनेके कारण संशोधन किस प्रकार हुआ है हम नहीं कह सकते। अतएव विद्वद्वर्ग, कहीं स्खलन हो तो, सुधारकर अध्ययन करें।

श्रीवीतरागाय नमः ।

श्रीऋषिपुत्रप्रणीत

—निमित्तशास्त्रम्—

ऋषभ जिनेश्वरको नमू करन शुद्धसमक्त ।
तीर्थकरके न्हवनसों पावत सुख अव्यक्त ॥ १ ॥
वंदों गुरुपदपद्म कृपायतन भवदुःखहर ।
महाकर्म तमपुंज जासु वचन रविउदयसम ॥ २ ॥
सरस्वतीको नमनकरि प्राकृत गहन विचार ।
भाषा शास्त्र निमित्तकी करूं बुद्धि अनुसार ॥ ३ ॥

मंगलाचरण

सो जयउ जयउ उसहो अणंतसंसारसायरुत्तिण्णो ।
झाणेणलेण जेणं लीलाइ ह्रिवि जियमणो ॥ १ ॥

अर्थ—जो अनंतसंसारको इंद्रियदमनका उपदेश देकर ध्यानमें मग्न होगये ऐसे श्री ऋषभदेवस्वामी सदाकाळ जयवंत हो ॥१॥

णमिऊण वड्ढमाणं णवकेवललद्धिमंडिय विमलं ।
वोच्छ दव्वणिमित्तं रिसिपुत्तयणामदो तत्थ ॥ २ ॥

अर्थ—जो नौ केवललब्धियोंसे सुशोभित हैं और अत्यंत निर्मळ हैं ऐसे श्रीवर्द्धमानस्वामीको नमस्कार करके श्री ऋषिपुत्र निमित्तशास्त्रको कहता है ॥२॥

प्रतिज्ञा

अह खलु रिसिपुत्तिय णामणिमित्तणाय, गम्मयणं पक्खर-म्साणि वग्गमुणिसिद्धकम्मं, जोइम णाणो विइगणविऊण क्खान महाणि तुष्णाय, त खलु तिविहेण वोच्छामि ॥ ३ ॥

अर्थ—यह निश्चय है कि निमित्तशास्त्र तीन प्रकार है जैसा कि ज्ञानियोंने निरूपण किया है, मैं ऋषिपुत्र कहता हूं।

निमित्तके भेद

जे दिट्ठ भुविरसेण्ण जे दिट्ठा कुहमेण कत्ताणं ।
सद्दसंकुलेन दिट्ठा वउसाइय एण णाणविया ॥ ४ ॥

अर्थ—जो पृथ्वीपर दिखाई दे, जो आकाशमें दिखाई दे और जिसका शब्द ही सुनाई दे इस प्रकार निमित्त शास्त्रके तीन भेद हैं। यह सब ज्ञानसे जाना जाता है।

जे चारणेण दिट्ठा अण दो सायसहम्मणाणेण ।
जो पाहूणेण भणिया त खलु तिविहेण वोच्छामि ॥ ५ ॥

अर्थ—जो चारणमुनियोंने देखा तथा अपने ज्ञानसे वैसा ही शुभाशुभ वर्णन किया और पंडितोंने भी वैसा ही वर्णन किया उसी निमित्तज्ञानको ऊपर कहे अनुसार तीन प्रकारसे वर्णन करता हूं ॥ ५ ॥

निमित्तके साधन

सूरोदय अच्छमणे चंदमसेरिक्खमग्गहचरियं ।
त पिच्छियं णिमित्तं सव्वं आएसिहं कुणह ॥ ६ ॥

अर्थ—पहले आकाशसंबंधी निमित्त बतलाते हैं, सूर्योदयके पहिले और सूर्य अस्त होनेके पीछे चंद्रमा, नक्षत्र आदिके मार्गको देखकर निमित्तज्ञानवालेको सब हाल मालुम करना चाहिये ॥ ६ ॥

आकाशप्रकरणं

सूरोग उयत्थमणो रत्तुप्पलवण्णहोव्व दीसिज्ज ।
सो कुणइ रायमरणं मंत्तीपुत्तं विणासेई ॥ ७ ॥

अर्थ— यदि सूर्योदयके समय सब दिशाएं मूंगाके समान लाल हो जाय तो समझना चाहिये कि इस देशका राजा वा मंत्रीका पुत्र मरणको प्राप्त होगा ॥ ७ ॥

ससिट्ठोहिवण्णहोयरि संकुण इत्ति होइ णायव्वो ।
संगामं पुण घोर खग्गं सूरो णिवेदेई ॥ ८ ॥

अर्थ—यदि सूर्योदयके समय सब दिशाए मानिकके समान वा लोहूके समान लाल हो जाय तो समझ लेना चाहिये कि यहां घोर युद्ध होगा और खूब तलवार चलेगी ॥ ८ ॥

हेमंतगिम्ह उण्ण गिम्हे सीय पमुच्चए सूरो ।
लोयस्स वाहि मरणं काले काले ण संदेहो ॥ ९ ॥

अर्थ—यदि हेमत ऋतुमें सूर्यसे गर्मी और ग्रीष्म ऋतुमें सूर्यसे सर्दी निकले तो जान लेना चाहिये कि मनुष्य बार बार बीमारीसे मरेंगे इसमे संदेह नहीं ॥ ९ ॥

उदयत्थमणो सूरो अग्गिफुलिंगेव णाय मुचंतो ।
दीसिज्ज जम्हि देसे तम्हि विणासो णिवेदेदि ॥ १० ॥

अर्थ—यदि सूर्यके उदय और अस्त होनेके समय जिस देशमें ऐसा मालूम हो कि सूर्यके भीतरसे अग्निकी चिनगारियां निकल रही हैं तो समझ लेना चाहिये कि इस देशमें हर तरहसे विनाश होगा ॥१०॥

अह णिग्गच्छेइ दीसइ उक्कंतो धूलिधूमगो आगो ।
सो कुणइ राइमरणं वरिसदिणब्भंतरे सूरो ॥ ११ ॥

अर्थ—यदि सूर्यके अस्त होनेके समय ऐसा मालूम हो कि सूर्यसे धूंआ धूलि निकल रही है तो समझना चाहिये कि एक सालके भीतर राजाका मरण होगा।

ि उदयच्छमणे सूरो वक्को इव दीसए णहयलम्मि ।
सो अइरेणयसाहदि मंत्तिनइरायमरणं च ॥ १२ ॥

अर्थ—यदि उदय और अस्त होनेके समय सूर्यकी आकृति टेढी मालूम हो तो समझो कि राजा वा मंत्रीका मरण अवश्य होगा ॥ १२ ॥

जइ मज्झासरिगेण मज्झे णयमयरणविअब्भेण ।
ायजइ उइतो छोयस्स भयंणित्तेणई ॥ १३ ॥

अर्थ—अब सूर्यके चिन्ह फल कहते हैं— यदि सूर्यके अस्त होनेके समय उसके भीतरसे जाज्वल्यमान पक्षीके आकारका उठता हुआ चिन्ह मालुम दे तो वह मनुष्योंका भयका कारण होता है ॥ १३ ॥

णरणूवेणब्भेण गीढो जइ दीसए समुइंतो ।
ज देसम्मि ज दीसइ रम्मास विणासण्णु व ॥ १४ ॥

अर्थ—यदि सूर्यसे ऊंची ज्वाला उठती हुई दिखाई दे तो छह महीनेके भीतर देशका नाश हो जावेगा ॥१४॥

अह सूरपासउइयो दीसइ पडिसूरउज्जया विदिक्कु ।
? मासे कुणइ पीडा रायाणं वाहि होय च ॥ १५ ॥

अर्थ— यदि सूर्यके अस्त होते समय सूर्यके पास ही दूसरा उद्योतवाला सूर्य दिखाई दे तो जानलो कि एक महिनेमें राजा और प्रजा दोनोंको व्याधिसे कष्ट होगा॥१५

अह दीसइ जइ खंडो उद्धूलो धूलिधूसरो सूरो ।
सो कुणइ वाहि मरणं देसविणासं च दुब्भिक्खं ॥ १६ ॥

अर्थ—यदि सूर्यके टुकडे टुकडे दृष्टिगोचार हों और उसमेंसे धूलि धूआं उठता हुआ दिखाई दे तो जानना चाहिये कि उस देशमें व्याधिसे पीडा वा मरण होगा देशका नाश होगा और दुर्भिक्ष [दुष्काल] पडेगा ॥ १६

अह मंडलेण णुट्ठ पीयय मजिट्ठसरिसकिण्हेण ।
सो कुणइ णवरसभया पंचमदिवसे ण संदेहो ॥ १७ ॥

अर्थ—सूर्यके अस्त होनेके समय यदि सूर्यके चारों ओर पीला मंजीठके रंगका वा काला मंडल दिखाई दे तो पांचवे दिन अवश्य ही नौ रसोंका भय उत्पन्न होगा, अर्थात् उनमें विकार उत्पन्न होगा इसमें संदेह नहीं ॥१७॥

अह दहिसरिस मेहो सूर पाणणाणिन्नु मक्कन्नइ। दिश्नु
सो कुणइ रायमरणं नट्टे दियहे ण संदेहो ॥ १८ ॥

अर्थ--यदि सांप और हाथीके समान सूर्य जाज्वल्यमान दिखाई दे तो जानलो कि छठे दिन राजाका मरण होगा ॥ १८ ॥

अह णच्चंता दीसइ पुरुसेहि बहुविदेहि सूवेहि ।
सो पंचमम्मि मास रोयं रुण्णे णिवेदेहि ॥ १९ ॥

अर्थ—यदि अस्त होते हुए सूर्यमे ऐसा दिखाई दे कि उसमेंसे पुरुषोंके आकारकी बहुतसी शाखाएं जाज्वल्यमान होकर निकल रही हैं तो समझ लो कि पांचवे महिनेमें बहुतसे मनुष्य हरतरहसे रोवेंगे ॥ १९ ॥

उदयच्छमणो सूरो सूरिहि बहुएहि दीसए विद्धो ।
मासे विदिए जुद्ध तद्देसो होइ णायव्वं ॥ २० ॥

अर्थ—यदि सूर्यके उदय और अस्त होते समय उसमें छेद दिखाई दें तो वहांपर दो महिनेमें युद्ध होगा, जिसमें बहुतसे मनुष्य मरेंगे ॥ २० ॥

अह धूमो अच्छयणे गिम्हम्हि य दीसए जयु सूरो ।
देसम्मि इद घोर तेरस दिय हम्मि जुज्झ च ॥ २१ ॥

अर्थ—यदि सूर्यके अस्त होनेके समय ऐसा मालूम हो कि सूर्यके भीतरसे धुएंके गोले निकल रहे हैं तो जानलो कि तेरहवे दिन यहां युद्ध होगा ॥ २१ ॥

अह मेहोणइयलये पउमिणि सुरिखुम दीसए जच्छं ।
सो पचम्मिग दिवहे वागं बरिरा न को नेई ॥ २२ ॥

अर्थ—अब आगे मेघके चिन्ह कहते हैं। यदि सूर्यके चारों ओर कमलके आकारका मंडल दिखाई दे तो पांचवें दिन हवा चलकर पानी बरसेगा ॥ २२ ॥

मुसलसरिच्छो मेहो दीसइ वज्जात पव्वयाभोया ।
मो सत्तमम्हि दिवहे वायं वरिसं च को वेई ॥ २३ ॥

अर्थ—यदि सूर्यके चारों ओर मूसलके आकारका मंडल दिखाई दे तो समझ लो कि सातवें दिन हवा चलकर अवश्य पानी बरसेगा ॥ २३ ॥

अह दीसइ परधीओ उदयच्छवणम्हि उट्ठितो घोरो ।
तो तियरो पुणि दिवहे वायं वरिसच को वेई ॥ २४ ॥

अर्थ—यदि सूर्यके उदय और अस्त होते समय उसके चारों ओर गोल मंडल दिखाई दे तो तीसरे दिन अवश्य ही हवा चलकर पानी बरसेगा ॥ २४ ॥

हेमंतकतुणकागिण्हे सुर्वे दक्खिणोय जये वाऊ ।
अण्णण्ण दिसा वायइ वरिसा मुत्तच्छ णायव्वो ॥ २५ ॥

अर्थ—यदि हेमंत ऋतुमें (माघ वा फाल्गुन महिनेमें) सर्दी मिली हुई दक्षिणकी हवा चले तो समझलो कि वर्षा शीघ्र ही होगी ॥ २५ ॥

ववन्द्रन सूरसुदयच्छमणे पडंति जलविंद ऊणहयलाऊ ।
तंइहे दिवहे वरसइ तहेसे णत्थि संदेहो ॥ २६ ॥

अर्थ—यदि सूर्यके उदय और अस्त होते समय ओसके

समान पानी पड़े तो उस देशमें इससे तीसरे दिन पानी बरसेगा इसमें संदेह नहीं ॥ २६ ॥

जदि चंडवायु वायदि अह पुण मदगि वायवे वाऊ ।
तहिं होही जलवरसे पंचम दिवहे ण संदेहो ॥ २७ ॥

अर्थ—यदि तेज हवा चले और फिर बीच बीचमें मंद हवा चले तो उस देशमें पांचवे दिन अवश्य पानी बरसेगा इसमें संदेह नहीं ॥ २७ ॥

छित्तेण कोई पुच्छइ घरम्हि छायंत हइ वसणो वा ।
उदकुभम्मियहच्छो वरसइ अज्जत णायव्वो ॥ २८ ॥

अर्थ—यदि कोई अचानक आकर पूछे कि क्या आपने मकान छालिया ? तथा कपड़े पहने हुए भी सर्दी मालूम होने लगे और घड़ोंका पानी गर्म मालूम हो तो समझलो कि आज कलमें ही पानी बरसेगा ॥ २८ ॥

सूरा पीयग्घवण्णा मंजिट्ठारायसरिसवण्णा ।
चारत्ता नीलग्घवण्णा वायं वरिसं णिवेदेहि ॥ २९ ॥

अर्थ—यदि सूर्यके उदय और अस्त होते समय आकाश पीला मंजीठ नारंगीके समान मालूम हो तो समझो कि हवा चलकर पानी बरसेगा ॥ २९ ॥

णप्पयवण्णसरिच्छा द्विकातिजं सणिणवेदेति ।
णियह धूसरवण्णा पाहुसिरण णिवेदेहि ॥ ३० ॥

अर्थ— तमाखूका रंगका संध्या समय बादल हो या

खाखी रंगका हो या बादलमें छेदसे हो तो जानको कि पानीका अंत होगया ॥ ३० ॥

अह खंड भिण्णाभिण्णा गोमुत्तसरिच्छकपडवण्णाभा ।

स कुणइ राइमरणं मंदं वरिसं णिवेदेहि ॥ ३१ ॥

अर्थ—यदि सूर्यके उदय या अस्त समय बादल खंड खंड और गोमूत्र जैसी आकृतिके काले रंगके दिखाई दें तो राजाका मरण और थोडीसी वर्षाको सूचित करते हैं ॥३१

छायिका इच्छंती दीसइ अब्भेहि बहुविहेहि रूवेहि ।

अक्खइ बालविणास हेमंतरणिरागायामस्सा ॥ ३२ ॥

अर्थ—यदि सूर्यके उदय और अस्त होनेके समय बादलके टुकडे टुकडे कई रंगके मालूम हों तो बालकोंकी मृत्यु और पानीकी निराशा सूचित होती है ॥ ३२ ॥

चंद्रप्रकरण.

चंदो सरूपसरिसो पेच्छिसणं विउणा इयलम्मि ।

जइ दीसइ तस्स फल भण्णम्मि इत्तो णिसामेहा ॥ ३३ ॥

अर्थ—अब चन्द्रमाके चिन्ह कहते हैं । चन्द्रमाका रूप देखकर शुभाशुभ फल कहनेका ज्ञान अब बतलाते हैं॥३३

पाबालगलसोमसो दक्खिनउत्तर समा णाऊ चंदो ।

कुणइ इवधनुसरिसो समसरिसं मंगलो नोइ ॥ ३४ ॥

अर्थ—प्रतिपदा या द्वितीयाका उदय होता हुआ बालक चंद्रमा धनुषाकार दक्षिण उत्तर समान हो तो वह सुभिक्षको सूचित करता है ॥ ३४ ॥

अबलं विपसी मधुरो रूवे पसन्नकक्खणो चंदो ।
णावाइ कुणइ वरिस सुभिक्खंदेइ हलसरिसो ॥ ३५ ॥

अर्थ—शुभ स्वच्छ सम चंद्रमा अच्छा पानी बरसाता है और हलसदृश चंद्र सुभिक्षको सूचित करता है ॥ ३५ ॥

आरोगं दक्खिनंवो जुगसपत्ति जुगस्सयाणो य ।
दंडम्मि दडसरिसो धणुसरिसो समहरो जुम्मं ॥ ३६ ॥

अर्थ—यदि चन्द्रमाकी दक्षिण दिशाकी किनारी ऊंची हो तो वह आरोग्यको सूचित करता है । समान किनारेवाला सम्पत्तिको सूचित करता है। यदि वह सपाट लकड़ीके आकार हो तो मनुष्योंको हरतरहसे दंड मिलनेकी सूचना देता है और धनुषाकार चंद्रमा सम होता है ॥३६॥

समचवणो समवण्णं भयं च पीड तहा णिवेदेहि ।
लक्खारसण्णिासो कुणइ भयं सव्वदेसेसु ॥ ३७ ॥

अर्थ—समान चंद्रमा समवर्ण हो तो भय और हानि करता है । तथा लाखके रंगका चंद्रमा समस्त देशमें भयको सूचित करता है ॥ ३७ ॥

विप्पाणं देइ भयं नाहिरिण्णो तहा णिवेदेई ।
देपीडो खत्तियणासं धूसरवण्णो य वइसाणं ॥ ३८ ॥

अर्थ—यदि चंद्रमा लाल रंगका दिखाई दे तो ब्राह्मणोंको भयका कारण होगा, पीला क्षत्रियोंका नाश करेगा और खाखी [धूसर रंगका] वैश्योंको भय सूचित करता है ॥ ३८ ॥

किण्णा सुद्द विणासो चित्तलवण्णोय हणइ पयईऊ।
दहिखीरसंखवण्णो सव्वम्हिय पाहिदो चंदो॥ ३९॥

अर्थ—काला चन्द्रमा शूद्रोंका नाश करता है। पंचरंगा, दहीके रंगवाला, दूध और शखके रंगवाला चंद्रमा समस्त दूध देनेवाले पशुओंका नाश करता है॥ ३९॥

परिकर्विम्ग पास वच्छइरो रोहिणिमज्झे पयइये चंदो।
सो कुणइ पयविणास पंचममासे ण संदेहो॥ ४०॥

यदि चंद्रमाके चारों ओर खंडित मंडलाकार दिखाई दे तो पांचवें महीने अवश्य दूधका नाश होगा॥ ४०॥

जे मंडलाय पच्छिया सूरे ससिणो य तित्तियचिंवा।
वरसुण्णाइ णिमित्तं ते सव्वे हुति णायव्वा॥ ४१॥

अर्थ—सूर्य तथा चंद्रमाके चिन्ह मंडल आदि जो कुछ पीछे कह गये हैं वे निमित्त अवश्य होते हैं॥ ४१॥

पव्वाणि रहिओ चंदो राहूणं गाहिनूपयागिज्जू।
सो कुणइ देसपीडं भयं च रणा णिवेदेहि॥४२॥

अर्थ—जो चन्द्रमा पर्वरहित हो परन्तु राहूके द्वारा ग्रसा हुआ (ग्रहण लगा हुआ) ऐसा मालूम हो तो वह चंद्रमा देशकी पीडा और भयको सूचित करता है॥४२॥

मेहाणय जेणूवा जं भणिया पढमसरजोगस्स।
ते चिय ससिणो सव्वे णायव्वा वण्णतूवेण॥ ४३॥

अर्थ—वर्षाके लिए जो चिन्ह पहिले सूर्यके कह आये हैं वे ही चिन्ह चन्द्रमाके समझ लेना चाहिये॥४३॥

उत्पातयोग प्रकरण

अब आगे उत्पातोंका वर्णन करते हैं–

अह अंतरिक्ख सद्दो सुव्वइ बहुयाणवेवपुरिसाणं ।
पंचममासे मारी होइ देसे ण संदेहो ॥ ४४ ॥

जिस देशमें बहुतसे मनुष्योंकी आवाज सुनाई दे परंतु बोलनेवाले दिखाई न दें तो समझ लो कि वहांपर पांचवें माहमें मारीकी बीमारी होगी ॥ ४४ ॥

अह बहु सति धावंति सद्दो जुज्झनुपवदंति ।
रोवारोव कुणता भूयो लोयस्स णासाय ॥ ४५ ॥

अर्थ—जहांपर बहुतसे मनुष्योंके दौडने और लडने की आवाजे मालूम हों और रुदन करते हुए शब्द सुनाई दें तो जानलो कि यहां हजारो मनुष्योंका नाश होगा ॥ ४५ ॥

संझाविलासमये रवयं सिवा चउदस गामपासेसु ।
कइदिग्गामुपाद रत्थि विणास ण संदेहो ॥ ४६ ॥

अर्थ—यदि शामके समय गीदड लोमडी गांवके चारों ओर रोवे तो जानलो कि राजाका मरण होगा ॥ ४६ ॥

मउझण्णे परचक्कं, संझाए कुणइ रोगबाहिभयं ।
सेसेसु सिवा काले रोवंती सोहना रत्ती ॥ ४७ ॥

अर्थ—यदि गीदड आधी रातको रोवे तो परचक्रके भयको सूचित करते हैं, यदि शामके वक्त रोवें तो रोग और

व्याधिके भयको सूचित करते हैं । इन दोनों समयोंको छोडकर बाकीके समयमें रोवें तो उससे कोई हानि नहीं ॥ ४७ ॥

अह तूरवो सुव्वइ अनाहवो जम्मि कम्मि देसम्मि ।
तद्देसे जुद्धभयं होही घोरं ण संदेहो ॥ ४८ ॥

अर्थ—जिस देशमे निरंतर कोलाहल शब्द सुनाई दिया करे उस देशमे अवश्य घोरयुद्ध होगा ॥ ४८ ॥

अह जत्थ धुवो चलई चालिज्जंतो वि णिच्चलो होई ।
होइ तस्स विणासो गामस्स य तीहि मासेहि ॥ ४९ ॥

अर्थ—जहांपर ध्रुव चीजे चलायमान हो जायं और चलायमान चीजें अचल हो जाय तो तीसरे महीने उस गांवका नाश हो जावेगा ॥ ४९ ॥

णाणा बहुत्तमणा वज्जति अताडिया चउद्दी ।
णासं तद्देसगमो वरपुरिस णा ण सदेहो ॥ ५० ॥

अर्थ—जिस गांवके चारों ओर बिना बजाये कई तरहके बाजोंकी आवाज सुनाई दे तो उस पुरीका नाश हो जावेगा ॥ ५० ॥

अहिजुत्ताविय सपडा वच्चति णगाहिया विर्मेच्चाति ।
वित्तति गामघाई भयं च णो णिविदीहि ॥ ५१ ॥

अर्थ—जिसमें सांप जुते हुए हैं ऐसी गाडी यदि गांवकी ओर आती हुई दिखाई दे तो जानलो कि इस गांवके खोटे भाग आये ॥ ५१ ॥

जूवो हलो विदीसइ णच्चंतो वित्तमज्झयारम्मि ।
होई णयरविणासो परचक्काऊ ण संदेहो ॥ ५२ ॥

अर्थ—बिना बैलोंका हल यदि आपसे आप खडा होकर नाचने लगे तो जानलो कि परचक्रसे इस गांवका नाश होगा ॥ ५२ ॥

णाणा दुमउगणाियदि णांगंतो जइ पडेदि भूमीए ।
तो अक्खइ मारिभयं तग्गामे णत्थि संदेहो ॥ ५३ ॥

अर्थ— बिना हवा चले वा बिना अन्य कारणके यदि कोई वृक्ष अपने आप गिर पडे तो उस गांवमे मारी की बीमारी जरूर होगी ॥ ५३ ॥

णयरस्स रच्छमज्झे साणा रोवंति णुद्धतुंडाणं । उद्धमो
होई णयरविणासो परचक्काऊ ण संदेहो ॥ ५४ ॥

अर्थ—शहरके मध्यमे कुत्ते ऊंचा मुंह करके रोवे तो परचक्रसे नगरका नाश होगा, इसमे संदेह नहीं ॥ ५४ ॥

जम्मि णम्मि यदि तं कंकाल ईजइ विदीसए जत्थ ।
राईविणासो होही परचक्काऊ ण संदेहो ॥ ५५ ॥

अर्थ—जिस शहरमें पुरुष कंकाड हड्डियोंका पुरुषाकार जैसा मालुम दे तो जानलो कि परचक्रसे वहांके राजाका नाश होगा ॥ ५५ ॥

आमिसपक्खी गामे णयरे य जत्थ दीसति ।
होई णयरविणासो परचक्काऊ ण संदेहो ॥ ५६ ॥

अर्थ—जहांपर मांस खानेवाले पक्षी बिना ही कारण

बहुतायतसे उडते हुए दिखाई दें तो वह नगर परचक्रसे अवश्य नष्ट होगा ॥ ५६ ॥ दोप

अह बाला कीलंता मिलिया जइ सव्वदेसि धावंति ।
जुज्झति पुणो सव्वे तयहुवि जुज्झंति णायव्वो ॥ ५७ ॥

अर्थ—जहांपर बच्चे खेलते खेलते आपसमें लडाई प्रारभ करके क्रोधसे लडने लगे तो जानलो कि यहां युद्ध अवश्य होगा ॥ ५७ ॥

हा गेहाणि ते कुणत अग्गी लायति बहु रमंति ।
तम्मिय गामे अग्गी पंचमदिवहे ण संदेहो ॥ ५८ ॥

अर्थ—यदि बच्चे खेलनेके लिए घरसे आग लेलेकर आवें और उससे खेले तो पांचवें दिन उस गांवमें अवश्य आग लगेगी ॥ ५८ ॥

अह कीलमाणचोरं तवालया सव्वदो य धावति ।
तइयम्मि तच्च दिवहे चोरस्स भयं मुणेयव्वं ॥ ५९ ॥

अर्थ— जहांपर बच्चे खेलते खेलते यह चोर आया पकडो आदि शब्द मुंहसे निकालें तो उस गांवमें तीसरे दिन चोरका भय होगा ॥ ५९ ॥

अह माणुसीय गाएय हथिणी घोटियाय सुणहीणा ।
पसवंति अब्भदाई देसविणासं णिवेदति ॥ ६० ॥

अर्थ—जहांपर मनुष्य गाते हो वहांपर गाना सुनने के लिए यदि घोडी, हथिनी, कुतियां आवें और गाना सुनने लगे तो जानलो कि उस देशका नाश होगा ॥६०॥

अह माणुसोए मास गावी एहोय पक्ख एक्केण ।
छम्मासेण य घोडो वरिसेण य हत्थिणी कुणई ॥ ६१ ॥

अर्थ—जहांपर पंद्रह दिनतक घोडी या हथिनी गाना सुना करे तो छह महीनेमें घोडी और एक वर्षमें हथिनी उस देशका नाश करेगी ॥ ६१ ॥

सुणई पणमासेहिं जइ पसवइतो वियाण उप्पादं ।
गामविणास एए छट्ठ मासे पकुव्वंति ॥ ६२ ॥

अर्थ—यदि पांचवें महीनेतक ये दोनो पशु गाना सुनते रहे तो छट्ठे महीने उस गांवका नाश अवश्य होगा ॥

जइ छेळएहि गीढो कुक्कुरो मसणहि मज्जारो ।
पिक्खिय एय णिमित्तं गावविणासं णि णायव्वो ॥ ६३ ॥

अर्थ—जहांपर गीदड कुत्तेको और चूहा बिल्लीको मार लगादे तो उस देशका नाश अवश्य होगा ॥ ६३ ॥

जइ सुक्खो विय रुक्खो उल्लिहमाणो य दीसई जत्थ ।
गामे वा णयरे वा तत्थ विणासं ति णायव्वो ॥ ६४ ॥

अर्थ—जिस शहर वा गांवमें सूखा पेड उखडता हुआ दिखाई दे तो उस शहर वा गांवका नाश अवश्य होगा ॥ ६४ ॥

वर्षाउत्पात.

गामे वा णयरे वा जइ रिसइ बहु विहाग वरिसाइ ।
वसगंसपूयवरिसं तिल्लं सप्पे च रुहिरं वा ॥ ६५ ॥

अर्थ—किसी गांव वा नगरमें वर्षासंबंधी उत्पात

होते है, जैसे लोहूकी वर्षा, मांसकी वर्षा, घीकी वर्षा, तेलकी वर्षा । आगे उनके फलोंको कहते है ॥ ६५ ॥

लोही मारी हड्डी घोरा जत्थे हुं एहोंति वरिसउप्पाया ।
तद्देसे अज्जिजहा कालपमाणं वियाणित्ता ॥ ६६ ॥

अर्थ—जहांपर ऊपर कही हुई वर्षाएं हो तो वहांपर घोर मारीकी बीमारी होती है । उस देशका त्याग करो। आगे इसकी अवधि भी बतलाते है ॥ ६६ ॥

मंसाउ मासेऊ मासेण दोमासे सोणियम्स णायव्वो ।
विट्ठाए छम्मासं चिय तिल्ले सत्तरत्तेण ॥ ६७ ॥

अर्थ—यदि मांसकी वर्षा हो तो एक महीनेमें, लोहूकी वर्षा हो तो दो महीनेमें, विष्ठाकी वर्षा हो तो छह महीनेमे और घी तेलकी वर्षा हो तो सात दिनमें ही अपना फल देती है ॥ ६७ ॥

परचक्कभवो घोरा मारी वा तत्थ होइ देसम्मि ।
रण्ण णयरस्स विणासो वा देसविणासो य णियमेण ॥ ६८ ॥

अर्थ—ये सब उत्पात परचक्रभय, घोर मारी, राजाकी मृत्यु, नगरका नाश वा देशका नाश अवश्य करते हैं ॥६८

अण्णइ काले वल्ली फुल्लंती मेहणुव्व सुरोयाणं ।
सेरुव्वा असदीसइ देसविणासो ण सदेहो ॥ ६९ ॥

अर्थ—यदि अकाल समय [विना मौसिमके] लताएं फूलें और वृक्षोसे खूनकी धारा निकलती हुई दिखाई दे तो अवश्य ही देशका नाश होगा ॥ ६९ ॥

सामान्यउत्पातयोग समाप्त

देवउत्पातयोग ।

तित्थयरछत्तभंगे रथभंगे पायहत्थसिरभंगे ।
भामंडलस्स भंगे सरीरभंगे तहच्चेव ॥ ७० ॥

अर्थ—अब तीर्थंकरकी प्रतिमासे जो उत्पात होते हैं उन्हें कहते है। यदि तीर्थंकरका छत्र भंग हो, रथ भंग हो, अथवा पांव, हाथ, मस्तक, भामंडल या शरीरभंग हो ॥७०॥

एए देसस्स पुणो चलणे तह णच्चणे य णिग्गमणे ।
जं हुत्तिय तहोसा ते सव्वे कित्तइस्सामि ॥ ७१ ॥

अर्थ—तथा जिस देश वा नगरमें प्रतिमाजी स्थिर या चलते भंग हो जावे, उनके शुभ वा अशुभ फलोंको कहता हू ।

छत्तस्स पुणो भंगो णरवईभंगो रहस्स भंगेण ।
होहइ णरवईमरण छठ्ठे मासे पुरविणासो ॥ ७२ ॥

अर्थ—छत्रभंग होनेसे राजाका भंग [हानि] होता है । रथके टूटनेसे राजाका मरण होता है । और छठे महीने उस शहरका नाश हो जाता है ॥ ७२ ॥

भामंडलस्स भंगे णरवईपीडा य मरणाता ॥
होहइ तइए मासे अहवा पुण पंचमे मासे ॥ ७३ ॥

अर्थ—भामंडलके भंग होनेसे तीसरे वा पांचवें महीने राजाको मरण पर्यंत कष्ट होता है ॥ ७३ ॥

हत्थस्स पुणो भंगे कुमारमरणं च तइए मासेण ।
पायस्स पुणो भंगे जनपीडा सत्तमे मासे ॥ ७४ ॥

अर्थ—प्रतिमाजीका हाथ टूटनेसे तीसरे महीने राजकुमारकी मृत्यु होगी, और पांवके टूटनेसे सातवें महीने मनुष्योंको कष्ट होगा ॥ ७४ ॥

एकाइमे चलिए पव्वयप्पमाण वियाण पीट्टेइ ।
णयरस्स हवइ पीडा णच्चतो तइयमासेण ॥ ७५ ॥

अर्थ—यदि प्रतिमाजी आपसे आप चलायमान हो जावे तो तीसरे महीने नगरके मनुष्योंको और राजाको अचानक कष्ट होगा ॥ ७५ ॥

णरवइपहाणमरणं सत्तममासेण हवइ सिरभंगे ।
चउवण्णस्स पुणो जणवइपीडा हवइ घोरा ॥ ७६ ॥

अर्थ—यदि प्रतिमाजीका मस्तक भंग हो जाय तो सातवें महिने राजाके प्रधानकी मृत्यु होगी और भुजाके टूटनेसे मनुष्योंको घोर पीड़ा होगी ॥ ७६ ॥

पडिमा विणिग्गामेण य रायामरण च चोरअग्गिभयं ।
जायइ तईएमासे पडिए पुण लक्खइपडणं ॥ ७७ ॥

अर्थ—यदि प्रतिमाजीसे आग निकले या सिंहासनसे गिरपड़े तो जानलो कि तीसरे महीने राजाकी मृत्यु तथा अग्नि और चोरका भय होगा ॥ ७७ ॥

जइ पुण एए सव्वे पक्खब्भसरेण उप्पाया ।
जायंति तया खिप्पं दुब्भिक्खभयं णिवेदंति ॥ ७८ ॥

अर्थ—यदि ऊपर कहे हुए उत्पात बराबर पंद्रह दिन

तक होते रहे तो बहुत ही शीघ्र और अवश्य दुष्कालका भय होगा ॥ ७८ ॥

देवा णच्चंति जिहं पस्सिज्जंतीय तहय रोवाति ।
जय घूमाति चलति य हंसाति वा विविहरूवेहि ॥ ७९ ॥

अर्थ—यदि देवप्रतिमा नाचने लगे, जीभ निकाले या रोने लगे या घूमने लगे, चलने लगे, हंसने लगे कई प्रकारके भाव दिखावे तो— ॥ ६९ ॥

लोयस्स दिंति मारी दुब्भिक्खं तहय रोय पीड च ।
चित्तं तोहा पावं पुरस्स तह णयररायस्स ॥ ८० ॥

अर्थ--जानलो कि मनुष्योंको मारीकी बीमारी दुष्काल तथा शहरके लोगोंको और राजाको कई प्रकारसे कष्ट होगा ॥ ८० ॥

रुइयेण राइमरणं हसियेन पदिसाविब्भमो होई ।
चलियेण कपिएणय संगामो तत्थ णायव्वो ॥ ८१ ॥

अर्थ—प्रतिमाका रोना राजाकी मृत्युका सूचक है। हंसनेसे देशमे विद्वेष होगा, प्रतिमाका चलना और कांपना बतलाता है कि यहां संग्राम होगा ॥ ८१ ॥

पस्सिणं तह वाही धूमेण य बहुविहाणि रैयाणि ।
बंभाण वियाणास रुद्दे सुंपणासणं कुणइ ॥ ८२ ॥

अर्थ—प्रतिमासे धूंआ सहित पसीनेका निकलना कई तरहके फल बतलाता है। यदि शिवकी प्रतिमासे ऐसा हो तो ब्राह्मणोंका नाश होगा ॥ ८२ ॥

वणियाणञ्च कुबेरे खंदो पुण भोइये विणासेई ।
कायच्छाणं विसहो इंदो राइं विणासेई ॥ ८३ ॥

अर्थ—कुबेरकी प्रतिमासे धुंआ सहित पसीना निकले तो वैश्योंका नाश होगा। तथा यदि कुबेरकी प्रतिमाके कंधेसे ही धूआ सहित पसीना निकले तो भोइयोंका नाश होगा। और हाथोंसे धूंआ निकले तो कायस्थोंमें संकट होगा। यदि इंद्रकी प्रतिमासे ऐसा हो तो राजाका नाश होगा ॥ ८३ ॥

भोगवईण कामो किण्णो पुण मट्ठलोगणा णयरे ।
अरहंत सिद्धबुद्धा जईण णासं पकुव्वंति ॥ ८४ ॥

अर्थ-यदि कामदेवकी प्रतिमासे धुंआ निकले तो आगम वातोंकी हानि होगी। यदि कृष्णकी प्रतिमासे हो तो समस्त जातिके मनुष्योंकी हानि होगी और यदि अरहंत, सिद्ध और बौद्धकी प्रतिमासे ऐसा हो तो जातियोंका नाश होगा ॥ ८४ ॥

कच्छाइ नञ्ञे सियचंडियाय पहणंति सव्वमहिलाणं ।
उपमालियाय पहणइ वाराही हणइ हत्थीणं ॥ ८५ ॥

अर्थ—चंडिकादेवीके बालोंसे यदि ऐसा हो तो स्त्रियोंके नाशका हेतु है और वाराहीदेवी हाथियोंका नाश करती है ॥ ८५ ॥

णाइणि गब्भविणास करेइ पहुणाण णासयरो ।
एदे गेक्षिणु तुला असुह कुव्वंति तेसु रया ॥ ८६ ॥

अर्थ—नागिनी देवीसे धूम निकले तो गर्भनाश और ये सब बाते जो ऊपर बतलाई हैं वे सब निश्चयसे अशुभ करती हैं ॥ ८६ ॥

जइ सिवलिंगं फुट्टइ अग्गी जाळवमुट्ठफुल्लिंगं ।
वसतिल्ल रुहिरव्वा होइइ जो जाण उप्पायं ॥ ८७ ॥

अर्थ—यदि शिवलिंग फूटे और उसके भीतरसे अग्नि की ज्वाला उठे या खूनकी धारा निकले तो उसका फल बतलाते हैं ॥ ८७ ॥

फुडिए णयाति भेऊ अग्गी जालेण देसणासो य ।
वसतिल्लरुहिरधारा कुणंति सयं ण खद्दस ॥ ८८ ॥

अर्थ—शिवलिंग फूटनेसे आपसमें फूट फैलेगी, अग्नि की ज्वालासे देशका नाश होगा और खनकी धारासे घर घर रोना होगा ॥ ८८ ॥

मासेहि तीइयेहि रूव दंसंति अप्पणा सव्वे ।
जईण तिक्कोइ पूया देवाणं भत्ति एएणं ॥ ८९ ॥

अर्थ—ऐसे उत्पातोंके होते ही मनुष्योंको चाहिए कि कि तीन महिने तक भक्ति सहित देवोंकी पूजन करें ॥८९.

मल्लेहि गंध-धूवेहि पुज्जावलि-बहुवियार देवेहि ।
नसंति तव्वद्दिवा सति तम्मं णिवेदंति ॥ ९० ॥

अर्थ—पुष्प, गंध, धूप, दीप, नैवेद्य आदिसे देवोंकी पूजन करनी चाहिए ॥ ९० ॥

णि
अवमानिया विणासं करंति तह पूइया अपूएहिं ।
वा देव णिच्चं पूया तम्हा पुण सोहणा भणिया ॥ ९१ ॥

अर्थ---देवोंका अपमान करना हानिका कारण है । इसलिए देवोंको कभी अपूज्य न रक्खे उनका प्रतिदिन पूजन करे । इसीमें भलाई है ॥ ९१ ॥

णय कुव्वति विणासं णय रोये येण दुक्खसंतावं ।
देवावि आइ विरुधा हवति पुण पूइया सतः ॥ ९२ ॥

अर्थ—संतुष्ट हुए देव कुछ नाश नहीं करते और दुःख, संताप आदि भी नहीं देते । इसलिए शांतिकी इच्छा करनेवाले देवोंको सदा पूजन करते रहना चाहिये ॥९२॥

इति देव उत्पातयोगसमाप्त.

—×—

राजोत्पातयोग.

छत्तोनुजलदतो जइ पडइ णरवइस्स पासम्मि ।
अह पंचमम्मि दिवसे णरवइ णसित्ति णायव्वो ॥ ९३ ॥

अर्थ—यदि छत्र चमर टूटकर आपसे आप राजाके पास आकर पड़े तो जानलो कि पांचवें दिन अवश्य राजा की मृत्यु होगी ॥ ९३ ॥

अह णंदि तूर सक्खा वज्जंति अनाहया विपुंदति ।
अह पंचमम्मि मासे णरवइमरण च णायव्वा ॥ ९४ ॥

अर्थ—जहांपर ढोलक, तुरई और शंखके बजनेकी

आवाजें कानमें सुनाई दें तो वहां अवश्य पांचवें महीने राजाकी मृत्यु होगी ॥ १४ ॥

चावं मुसली सत्ती सतोणखतोणवर जक्ख दीसंति ।
अह पचमम्मि मासे णरवइ णासत्ति णायव्वो ॥ १५ ॥

अर्थ—जहांपर यक्ष मूसलसे लडते दिखाई दे वहांपर पांचवें महिने अवश्य राजाकी मृत्यु होगी ॥ १५ ॥

कोट णयरस्सदोर देवल चउप्पहे य रायगिहे ।
अह तोरणेय इदो णिद्धमाण मोहण णंऊ ॥ १६ ॥

अर्थ—नगर या कोटके दरवाजेपर, देवमंदिरपर या चौराहेपर या राजमहलपर पक्षोंको लडते या नाचते देखे तो नीचे लिखा फल समझे ॥ १६ ॥

पायारवालवहो तोरणमज्झे य गब्भयाऊ य ।
गयसाल अस्स साले कुणइ वहं साहणस्स सया ॥ १७ ॥

अर्थ—कोटपर नाचनेसे बच्चोंकी हानि, दरवाजेपर नाचनेसे गर्भवती स्त्रियोंकी हानि और गजशाला या घुड-शालापर नाचनेसे साहूकारोंकी हानि होगी ॥ १७ ॥

देवकुले विप्पभओ रायगिहे रायणासणं कुणई ।
शर्कधये सुयपडिवो पुरस्स णासं णिवेदेइ ॥ १८ ॥

अर्थ—देवमंदिरपर नाचनेसे ब्राह्मणोंको दुःख हो, राजमंदिरपर नाचनेसे राजाका मरण हो और चौराहेपर नाचनेसे शहरका नाश होता है ॥ १८ ॥

आइच्चो जइ छिद्दो अह अकवीसे य दीसए मज्झे ।
तो जाण रायमरणं संगामो होई वरिसेण ॥ ९९ ॥

अर्थ—यदि सूर्यमें छेदसे मालूम होने लगे और सूर्यके मध्यमें कुजाकृति मनुष्य आदि मालूम हो तो एक वर्षमें राजाकी मृत्यु और युद्ध होगा ॥ ९९ ॥

दिवसे उलूय हिंडति सव्वन वायसउ रयणीसु ।
अरवति पुरविणास भय च रण्णं णिवेदेहि ॥ १०० ॥

अर्थ—यदि दिनमें उल्लू और रातको कौवे रोवे [फिरे] तो नगरका नाश और संग्रामका भय होगा ।१००।

इंद्रधनुषसे शुभाशुभ

रत्तिम्मिय इंदधणु जइ दीसए सोय—सुकिलमं ।
सो कुणइ रथभंग रणस्स वरिोय-पीड च ॥ १०१ ॥

अर्थ—यदि रातके समय श्वेत धनुष दिखाई दे तो जानलो कि यहांपर संग्रामके रथभंग होगे । और मनुष्योंमें कष्ट होगा ॥ १०१ ॥

दिवहे दीसइ धणुओ पुव्वेण य दक्खिणेण वामेण ।
सो कुणइ णीरणास वायं च वं मुंचयं बहुयं ॥ १०२ ॥

अर्थ—यदि दिनमें इंद्रधनुष पूर्वसे दक्षिणको टेढा मालूम हो तो जानलो कि खूब हवा चलेगी और पानी नहीं बरसेगा ॥ १०२ ॥

पच्छिमभाये पुणओ वरिस च विमुचए अइ बहुयं ।
उत्तर उइयो अहवा दीसंति ण सोहणं धणू ॥ १०३ ॥

अर्थ—यदि पूर्वसे पश्चिमको टेढा मालूम दे तो जानलो कि पानी खूब पडेगा। यदि पूर्वसे उत्तरको धनुष दीखे तो भी अच्छा नहीं है ॥ १०३ ॥

धणियं णइएावत्ता कन्या कुव्वंति मंडलं णिउअं।
साहंति अग्गिदाह चोरभय च णिवेदात्ति ॥ १०४ ॥

अर्थ—यदि इद्रधनुष मंडलाकार दिखाई दे तो अग्नि और चोरका भय समझलो ॥ १०४ ॥

इदुइवणेय पुणो जे दोसा हुंति णयरमज्जम्मि।
ते हुंति णरिंदस्स दु वरिसुब्भिणब्भतरे णियदं ॥ १०५ ॥

अर्थ—ऊपर जो इद्रधनुषके दोष बतलाये है वे वहां ही समझना चाहिये कि जिस नगरमें वा जिस राजाके राज्यमे दिखाई दें। इनकी अवधि दो वर्षतक है ॥१०५॥

उट्ठंतो जइ कंपइ परिघो लभऊ वलयग्गाणमई।
तो जाणइ वलसोहं रजब्भ संचरणस्स ॥ १०६ ॥

अर्थ—जो धनुष उठता हुआ कांपता दिखाई दे वा कभी ऊंचा कभी चौडासा दिखाई दे तो जान लो कि राज्यभय होगा ॥ १०६ ॥

इंदो कीलविणास मंत्तिविरुद्धो दुपरियणे होई।
उट्ठंत पुण पडइय णरवईपडणं णिवेदेई ॥ १०७ ॥

अर्थ—यदि धनुष सीधा खडासा मालूम दे तो मंत्री और राजामें विरोध हो। यदि धनुष उठता हुआ दिखाई देकर उसी समय गिर पडे तो राजाका राजभंग हो ॥१०७॥

भंगे णरवइभंगं फुणियेण रोयपीडिऊ होई ।
पावग्गइस्स नु गहिए उठ्ठंतो कुणइ संगामं ॥ १०८ ॥

अर्थ—यदि धनुष टूटता हुआ दिखाई दे तो राजाकी मृत्यु हो । यदि बिखरता दिखाई दे तो रोग पीडा हो और यदि अग्नि निकलती दिखाई दे तो जानलो कि संग्राम होगा ॥ १०८ ॥

जइ मुचइ धूम वा अग्गिजालं च णुठ्ठिओ सतो ॥
तो कुणइ राइमरण देशविणास पुणो पच्छा ॥ १०९ ॥

अर्थ—यदि धनुषसे धूआं उठती हुई और चारों ओरसे अग्निकी चिनगारियां उठती दिखाई दें तो समझो कि राजाकी मृत्यु होगी और बादमे देशका नाश होगा ।

वेटिज्जइ एहिज्जइ महुजालेहिं कीडएहिं वा ॥
तो जाण मारि घोरा जणसरोग च दुःभिक्खं ॥ ११० ॥

अर्थ—यदि इन्द्रधनुष मधु के छत्ते के समान नगर को घेर ले तो जानलो कि घोर महामारी होगी । जिससे मनष्योंको कष्ट होगा और दुष्काल पडेगा ॥ ११० ॥

इदद्दुयमारूढो रिठोज्जइ कुणइ बहुविहारावं ॥
अक्खइ सो पुरभग चणो य मेणा... ... ॥ १११ ॥

अर्थ--यदि एकके ऊपर एक इस तरह दो इन्द्र धनुष दिखाई दे तो जानलो कि मनुष्योंकी हर तरहसे हानि होगी और शहरका नाश भी होगा ॥ १११ ॥

ऐदे पुण उप्पादा सव्वे णासंति वरिसदे साति ।
पचदिणब्भतरेदो अहवा पुण सत्तरत्तेणं ॥ ११२ ॥

अर्थ—यह इंद्र धनुष संबंधी उत्पात पांचवें दिन या सातवें दिन अथवा एक सालके भीतर फल देते हैं ॥

यदि सो मोणिसुद्दो उट्ठदि णुप्पादवज्जिदो संतो ।
रण्णे पुरा स होहदि खेमसिवं तम्मि देसम्मि ॥ ११३ ॥

अर्थ—यदि ये उत्पात्त दोषरहित हो तो राजाको शांति करनेसे देशमें शांति हो जाती है ॥ ११३ ॥

अह उत्तमेहि णीया वमाणिया सोहणति णायव्वं ।
अहमेहि मुत्तमा पुण देसविणास परि कहति ॥ ११४ ॥

अर्थ—उत्तम पुरुष उत्पातोंको विचारकर देशविनाशका हेतु कहते हैं ॥११४॥

जइ बाला डिंडंना भिक्ख देहिंति मुकरावित्ता ।
दुब्भिक्खभय होइइ तद्देसे णत्थि संदेहो ॥ ११५ ॥

अर्थ—जहांपर बच्चे खेलते खेलते रोने लगे और मुंहसे कहे कि भीख दो तो जानलो कि उस देशमें अवश्य दुष्काल पड़ेगा ॥ ११५ ॥

पुव्वे उत्तरमुण्णानुक्का वा जत्थ दीसए थपडा ।
तत्थ विणासो होइइ गामे णयरे ण संदेहो ॥ ११६ ॥

अर्थ—[अब उल्कापातका वर्णन करते हैं उल्का उसे कहते हैं जो कि आकाशमें चमकती हुई चिनगारियों की लंबी शिखा बन जाती है] यदि उल्का पूर्व और उत्तर दिशामें दिखाई दे तो उस गांव वा नगरका अवश्य नाश होगा ॥ ११६ ॥

उक्का यत्थ जलंती मासे मासे सुसञ्चकालेसु ।
छम्मास पडमाणं तत्थोपाणं णिवेदेई ॥ ११७ ॥

अर्थ—जहांपर हर महीने उल्का दिखाई दे और इस तरह बराबर छह महीने तक दिखाई देती रहे तो उस देशके मनुष्योंके प्राण अवश्य जायंगे ॥ ११७ ॥

सुक्किदवा धूमाभा जइ वाणिचाइ धूसरा उक्का ।
पडमाणो दिसिज्झाणं हम्मितं जाण उप्पादं ॥ ११८ ॥

अर्थ—यदि सफेद धूसर रंगी उल्कापात जहां हो उसको बडा भारी उल्कापात जानो ॥ ११८ ॥

सुक्का हणेइ विप्पा रत्ता पुण खत्तइ विणासेई ।
पीया हणेइ वइसे किण्हा पुण सुद्दणासयरी ॥ ११९ ॥

अर्थ—सफेद उल्का ब्राह्मणोंका नाश करती है, लाल उल्का क्षत्रियोंको मृत्यु देती है, पीली उल्का वैश्यों का नाश करती है और काली उल्का शूद्रोंका संहार करती है ॥ ११९ ॥

चित्तलयंत्तिल्लाणं वाहिं मारिं च ताण कोवेइ ।
सामासम्मि पडती सोहण उक्का णिवेराई ॥ १२० ॥

अर्थ—पंचरंगी उल्का मारीकी बीमारी करती है और जो उल्का इधर उधरसे टकरा जाय वह प्राण नाश करती है ॥ १२० ॥

मज्झणिए संज्झाए वायग्गिभय णिवेइ पडंती ।
अह अण्णवेलदिट्टा उक्का रणस्स णासयरा ॥ १२१ ॥

अर्थ—संध्यासमय और अर्द्धरात्रिकी उल्का हवा और अग्निका भय करती है तथा सूर्योदयकी पहिली उल्का राजाका नाश करती है ॥ १२१ ॥

पडमाणी णिद्दिट्ठा धुव सुवण्णस्स णासिणी उक्का ।
अंगारायेण जुत्ता अग्गीदाइ णिवेदेई इ॥ १२२ ॥

अर्थ—जो उल्का पड़ती हुई दिखाई तो सुवर्णका नाश करती है और जो उल्का अगारे लिए हुए गिरे तो अग्नि-दाह करती है ॥ १२२ ॥

अह सुक्कुणय जुत्ता जल्हा जइ पडइ कहव पलजती ।
तोरणमुडविणास कच्छुकण्डुंच सा णिवेएई ॥ १२३ ॥

अर्थ—यदि शुक्रोदयमें जलती हुई उल्का दिखाई दे तो रसके भांडोंका नाश करती है और खुजलीकी बीमारी उत्पन्न करती है ॥ १२३ ॥

... .

राहूण विसयघाद जलणासय रहिवे उक्का ॥ १२४ ॥

अर्थ—यदि राहुके उदयमें उल्का गिरे तो पानीका नाश करती है ॥ १२४ ॥

परकम्मि जस्स पाडिया तस्स घोरा हवेइ पुण्णाणी ॥
इह दिसाए सुपडिया खेम-सुभिक्खं णिवेदेहि ॥ १२५ ॥

अर्थ—पश्चिम दिशामें पड़ी हुई उल्का घोर पीडा करती है और उत्तर दिशामें पड़ी हुई उल्का कुशल और सुभिक्ष उत्पन्न करती है ॥ १२५ ॥

अग्गेई अग्गिभयं जम्माए पुण सोसयं जणणी ॥
अह णेरइये पडिया दव्वविणासं णिवेदेहि ॥ १२६ ॥

अर्थ—यदि अग्निकोणमे उल्का पडे तो अग्निभय करती है, दक्षिण दिशामें पडी हुई उल्का पीडा संताप उत्पन्न करती है और नैऋतकोणमें पडी हुई उल्का द्रव्य नाश करती है ॥ १२६ ॥

अह वारुणीय पडिया वरिसं वायंच बहु णिवेएई ॥
वायव्वे अग्गभयं सोमा पुण सोतया होई ॥ १२७ ॥

अर्थ—यदि नीची या ऊपर चलती हुई उल्का पडे तो पानीकी वर्षा और हवा लाती है । वायव्यकोणकी तरफ चलती उल्का रोगभय करती है परंतु यदि उल्का वायव्यकोणकी हो तो शुभ भी है ॥ १२७ ॥

ईसाणाए पडिया घादं गब्भस्स कुणइ महिलाणं ।
दित्तदिसासुय पडिया भयजणणी दारुणी उक्का ॥ १२८ ॥

अर्थ—ईशानकोनेकी पडी हुई उल्का स्त्रियोंका गर्भ नाश करती है और यदि उल्का पूर्वमें पडे तो घोरभय उत्पन्न करती है ॥ १२८ ॥

भूरम्मि तावयती पुहवी तावेइ णिवणियाणुक्का ।
सोमे पुण सोममुही खेमसुभिक्खंकरी उक्का ॥ १२९ ॥

अर्थ—यदि आदित्यवारको [रविवार] उल्का पडे तो पृथिवीपर गर्मीसम्बन्धी पीडा आदि होगी और यदि

चन्द्रवारको [सोमवार] गिरे तो वह कुशल सुभिक्ष करती है ॥ १२९ ॥

जस्सय रिक्खे पडिया तस्सेवय सोहणं बहु कुणई ।
अण्णस्सवि कुणई भयं थोवं थोवं ण संदेहो ॥ १३० ॥

अर्थ—जो उल्कापात जहांसे उठा हो यदि वह वहीं वापिस लौट जाय तो अच्छा है अन्यथा वह अवश्य ही वारवार दुःख देता है ॥ १३१ ॥

कित्तिय-रोहिणिमज्झे पडमाणी कुणइ पुहइसंतावं ।
डहइय पुरगामाई रायगिहं णत्थि संदेहो ॥ १३१ ॥

अर्थ—यदि कृत्तिका और रोहिणी नक्षत्रमें उल्का पडे तो पृथिवीको संताप देती है और शहर वा गांव या राज्य महलको नष्ट करती है ॥ १३१ ॥

चोरा लुंपति मही रायकुलापयाचि लुप्पया होंति ॥
विलयति पुत्तदारा पापविणस्सते तथा सव्वं ॥ १३२ ॥

अर्थ—पृथिवीपर चोरोंका भय अधिक बढ जावेगा, ठग बढ जावेंगे । माता पुत्रको और स्त्री पतिको छोड देगी ॥१३२ ॥

इंदो वरसइ मंदं सस्साण विणासणो हवइ लोए ।
इय नुप्पापुणिमित्तं जाणेयव्वं चे पयत्तेण ॥ १३३ ॥

अर्थ—पाणी कम पडेगा । गेंहू, जों, चावल आदि धान्योंका नाश हो जावेगा । यह सब उत्पात इस प्रकारकी उल्का पडनेसे होता है ॥ १३३ ॥

गंधर्वनगरका फल

गंधर्वनगर उसे कहते हैं जो आकाशमें पुद्गल के आकार नगरके रूपमें बन जावे।

पुव्वदिस्सम्मिय भाए दीसदि गंधव्वसण्णिदो णयरो।
पच्छिमदेसविणासो होइइ तत्थेव णायव्वो ॥ १३४ ॥

अर्थ—यदि गंधर्वनगर पूर्व दिशामें दिखाई दे तो पश्चिम देशका नाश अवश्य होगा ॥ १३४ ॥

दक्खिणदिसम्मि दिट्ठो रायाणविणासणो हवे णियरे।
अह पच्छिमेण दीसइ हणेइ पुण पुव्वदेसोई ॥ १३५ ॥

अर्थ—यदि गंधर्वनगर दक्षिण दिशामें दिखाई दे तो राजाका नाश होगा और यदि पश्चिम दिशामें दिखाई दे तो पूर्व दिशाका नाश जल्दी होगा ॥ १३५ ॥

उत्तरउत्तरियाण णयराण विणासणो हवइ दिट्ठो।
हेमन्ते रोयभय वसंतमासे दुभिक्खयरे ॥ १३६ ॥

अर्थ—यदि गंधर्वनगर उत्तरदिशामें दिखाई दे तो उत्तरदिशावालोंका ही नाश करता है। यदि वह हेमत ऋतुमें दिखाई दे तो रोगभय करता है और वसंतऋतुमें दीखनेवाला गंधर्वनगर दुकाल करता है ॥ १३६ ॥

गिम्हेण णयरघादो पाउसकाले असोहणो दिट्ठो।
वरिसाभय दुब्भिक्खं सरए पुणवाहि पीडयरो ॥ १३७ ॥

अर्थ—यदि गंधर्वनगर ग्रीष्मऋतुमें दिखाई दे तो नगरका नाश करता है यदि वर्षाऋतुमें दिखाई दे तो

पानी कम होगा और दुष्काल होगा। यदि शरद्ऋतुमें दिखाई दे तो मनुष्योंको पीडा करता है ॥ १३७ ॥

रिउकाल मऊ एसो रयक्खय हिंडमाणणूवस्स।
मज्झणे रायाण छम्मासे सो विणासेई ॥ १३८ ॥

अर्थ—यदि शेष ऋतुओंमे गंधर्वनगर दिखाई दे तो उनका फल छह महीनेके भीतर राजाका नाश होगा ॥

तद्देसं सो णासदि जत्थ पहिंडंति दीसए राई।
पच्चूसे चोरभयं णरवइणास च पुण एई ॥ १३९ ॥

अर्थ—गंधर्वनगर रात्रिको दिखलाई दे तो देशका नाश करेगा। यदि कुछ रात्रि रहे तब दिखाई दे तो चोर-भय और राजाका नाश करता है ॥ १३९ ॥

अणकालम्मि दिट्ठ सुभिक्खय रोग जइदेसयरो।
जइमं वण्णाई दीसए इणऊ अणेयायं विसयाई ॥ १४० ॥

अर्थ—ऊपर जो समय बतलाया है उसके सिवाय अन्य समयमे यदि गंधर्वनगर दिखाई दे तो सुभिक्ष करता है और रोगको दूर करता है ॥ १४० ॥

अब आगे किस वर्णका गधर्वनगर क्या फल देता है सो बतलाते हैं।

चित्तलवो भयजणणो सामारोयस्स संभवो होई।
धिय तिल्ल खीरधादी सुक्किल ऊहोयं लोयस्स ॥ १४१ ॥

अर्थ—यदि पंचरंगा गंधर्वनगर हो तो वह नगर भय और रोगभय करता है। यदि वह श्वेत रंगका हो तो घी, तेल, दूधका नाश करता है ॥ १४१ ॥

किण्हो वच्छविणासो रत्तो पुण उदयणासणो भणिओ।
अइकालरत्तवण्णो दीसत असोहणो णयरो ॥ १४२ ॥

अर्थ—काले रंगका गंधर्वनगर वस्त्रनाश करता है, लालरंगका उदय नाश करता है और लाल रंगका अधिक देरतक दिखाई देता रहे तो अधिक अशुभ होता है ॥१४२

एए दरसण णूवा णयरी असुहावहा मुणेयव्वा।
जम्मि दिसे दीसिज्जा तम्मि दिसे तत्तु णायव्वा ॥ १४३ ॥

अर्थ—यह गंधर्व नगर जिस शहरमें दिखाई दे तो उसी शहरमें अशुभ होता है और जिस दिशामें दिखाई दे उस ही दिशामें हानि पहुंचाता है ॥ १४३ ॥

अह रिक्खमज्झ वच्चइ छायंतो तारयाणि बहुयाणि।
सो मज्झदेसणासं कुणइ पुणो णत्थि संदेहो ॥ १४४ ॥

अर्थ—यदि गंधर्वनगर आकाशके तारोंकी तरह बीचमें छाया हुआ दिखाई दे तो मध्य देशका अवश्य नाश करता है ॥ १४४ ॥

एयंतेणाउ वच्चइ एयंतविणाउ हवइ दिट्ठो।
यच्चतद्देसणासं वाहीमरणं च दुब्भिक्खं ॥ १४५ ॥

अर्थ—गंधर्वनगर जितनी दूरतक फैला हुआ दिखाई

दे तो समझ लेना चाहिये कि उतनी दूरतक देशका नाश अवश्य होगा, रोगसे मरण और दुर्भिक्ष होगा ॥ १४५॥

इंदपुरणयर सहिऊ दीसइ जइ पुक्खरोय छिडतो ।
चिंतइ देसनासं वाहीमरण च दुब्भिक्खं ॥ १४६ ॥

अर्थ—यदि गंधर्वनगर इंद्रधनुषाकार नगर, या वंबईके [सांपके घरके] आकारका हो तो देशनाश व्याधिसे मरण और दुर्भिक्ष अवश्य करेगा ॥ १४६ ॥

छाइज्जइ महेणं पव्वइ मित्तेण बहुपयारेण ।
छिज्जंत जच्छ दीसइ रायविणासो हवे णियमा ॥ १४७ ॥

अर्थ—यदि नगरके ऊपर नगरके आकारका गंधर्व नगर दिखाई दे और उसके चारों ओर कोट घिरा दिखाई दे तो निश्चय राजाकी मृत्यु हो ॥ १४७ ॥

अब पत्थरोंका पडना बतलाते हैं ।

उप्पलयाणय पडण उप्पाणिमित्तकारणं छाण ।
जइ उपलया पडंता बहुविहरूवेहि सव्वत्थ ॥ १४८ ॥

अर्थ—पत्थरोंका पडना कई तरहसे होता है और पत्थर भी कई तरहके पडते है, इसलिये उन सबका निमित्त कहते है ॥ १४८ ॥

गाला सरिच्छसरिस खज्जूरीफलसमाणरूवा ।
जत्थ णिवडतिर्यकरया तत्थ सुभिक्खति णायव्वं ॥ १४९ ॥

अर्थ—जहांपर चावल सरसों या खजूरके फल जैसे

पत्थर गिरें तो वहांपर सुभिक्ष होगा ॥ १४९ ॥

बाधीफलसरिसावा मंजूसावारसरिस रूवावा।
जय णिवडंतिय करया तत्थ सुभिक्खति णायव्वं ॥१५०॥

अर्थ—बदरीफल [बेर] मूंग और अरहरके समान भी पत्थरोंका पडना सुभिक्ष करता है ॥ १५० ॥

संवुक्कसुत्तिसरिसा घोर वरिसंकरं णिवेइत्ति ।
जइ णिवडंति रसानां वभूद वरिसागमा भणिया ॥ १५१ ॥

अर्थ—शंख शुक्ति जैसे सफेद छोटे छोटे अथवा मयूर जैसे पत्थर गिरें तो पानीके बरसनेकी खबर देते हैं ॥१५१॥

मंडुक्ककुम्मसरिसा गजदंतसमान रूवसं कासा ।
जइ दीसंत पडंता देसविणासं तु णायव्वं ॥ १५२ ॥

अर्थ—यदि मेडक, घडे और हाथीदंत जैसे पत्थर गिरें तो अवश्य ही देशका नाश होगा ॥ १५२ ॥

करिकुंभछत्तसरिसा थाली वज्जोयमा जइ पडंति ।
कुव्वति देसणासं रायाणं सव्वा विणासति ॥ १५३ ॥

अर्थ—अथवा पटका [घडा] हाथी छत्र थाली और वज्रके आकारके पत्थर गिरें तो देशका नाश करते है और राजाकी मृत्यूकी भी सूचना देते हैं ॥ १५३ ॥

विद्युल्लता योग

इंदम्मि दिसाभाए जइ विज्जू संपया सए जत्थ ।
चाउम्मासिय वरिसं तत्थय होहिंति णायव्वं ॥ १५४ ॥

अर्थ—यदि उत्तर दिशाकी ओर बिजली चमके तो हवा चलकर अवश्य पानी बरसेगा ॥ १५४ ॥

अग्गीये जइ दीसइ वाही मरणं च तत्थको वेदि ।
तयमासिय च वरिसं मासं तुणं वरिसए देवो ॥ १५५ ॥

अर्थ—यदि बिजली अग्निकोनमे चमके तो व्याधिसे मृत्युकी सूचक है और तीन महीनेतक पानी बरसनेकी सूचना देती है ॥ १५५ ॥

विसए गामे णयरे तस्स विणासो हवइ णिदिट्ठो ।
अहि दंसमसयमूसय उपत्ती णत्थि संदेहो ॥ १५६ ॥

अर्थ—तथा शहर वा गांवका नाश होगा और सांप डांस मच्छर चूहेकी उत्पत्ति अधिक होगी ॥ १५६ ॥

जम्मा दु पुणो दिट्ठो सुभिक्ख अरोगिया हवइ विज्जू ।
सा कुणइ गब्भणासं बालविणास च णियमेण ॥ १५७ ॥

अर्थ—यदि दक्षिण दिशामें बिजली चमके तो सुभिक्ष और आरोग्यता करती है । परन्तु गर्भनाश और बच्चोंको दुःख अधिक पहुचाती है ॥ १५७ ॥

चाउम्मासिय वरिस काले काऊय वरिसये देवो ।
जइ णेरइइदिसाये विज्जु दवंती य दीसिज्ज ॥ १५८ ॥

अर्थ—यदि नैऋत्य कोनमें बिजली चमके तो हवा अधिक चलेगी और समयसमयपर पानी बरसेगा ॥१५८॥

अह वायव्व दिसाए वायरिवाई विणासए वरिसं ॥
चोरा हुंतिय बहुया देसविणासं कुणइ राया ॥ १५९ ॥

अर्थ—यदि वायव्य कोनमें बिजली चमके तो हवा अधिक चले, पानी कम पडे, चोर अधिक हो और राजा का देश नाश हो ॥ १५९ ॥

अह वारुणीय दिट्ठा बहुवारिसइ कुणइ खेम-सुभिक्खं ।
वायव्वे रोयभयं विप्पाण भयंकरी विज्जू ॥ १६० ॥

अर्थ—वरुणदिशामें चमकती हुई बिजली कुशल और सुभिक्ष करती है । वायव्य दिशाकी बिजली रोगभय और ब्राह्मणोंको भय करती है ॥ १६० ॥

बहु वरिसइ जइ इंदो सस्साणय तस्स होइ णिप्पत्ती ।
सोमाए जइ दीसइ सीयलवायुव्व विज्जूव ॥ १६१ ॥

अर्थ—यदि बिजली पश्चिम दिशामे चमके तो पानी खूब बरसे, नाज अच्छा हो और हवा ठंडी चले ॥१६१॥

अहवा रायाविणासं चोराणभयं अह णिवेदेइ ।
ईसाणीए सुभिक्खं रोगो हाणीय वाहिणासयरी ॥ १६२ ॥

अर्थ—ईशानकोनकी बिजली राजाकी मृत्यु, चोरभय, सुभिक्ष, रोगहानि बतलाती है ॥ १६२ ॥

मेघयोग

अह मग्गासिर देवे वरसइ जत्थेय देस-णयरम्मि ।
सो मुयइ जिट्ठमासे सलिलं णियमेण तत्थेय ॥ १६३ ॥

अर्थ—यदि मगसिर महीनेमे पानी बरसे तो जेठके महीनेमें अवश्य पानीका नाश होगा ॥ १६३ ॥

अह पौसमास वरिसइ विज्जलउ'णहयलम्मि जइ देवो ॥
छट्ठे मासे वरिसइ बहुयं चर्वे पुच्चए तत्थ ॥ १६४ ॥

अर्थ— यदि पौषमासमें बिजली चमककर पानी बरसे तो असाढ महिनेमें अच्छी वर्षा होगी ॥१६४॥

अह माह फग्गुणेसुय दीतीणब्भियाउ अब्भाउ ।
छट्ठेउ णवउ मासे वरिसइ दे मुत्ति णायव्वो ॥ १६५ ॥

अर्थ—यदि माघ और फाल्गुनमें शुक्लपक्षमें तीन दिन पानी बरसे तो छटे और नौवें महीनेमें अवश्य पानी पडेगा ॥ १६५ ॥

अब्भाणे मेहपत्ती काले काले जहा पयासिज्ज ।
त तो होइदि वाहिभयं वासररत्तेण संदेहो ॥ १६६ ॥

अर्थ—यदि आकाशमें बादल छाए रहे और हर समय बरसते रहे तो वहांपर व्याधि रातदिन अवश्य प्रारंभ होगी ॥ १६६ ॥

अह कित्तियाहि वरसइ सस्साण विणासणो हवइ देवो ।
रोहिणिसु सुप्पत्ती देसस्सेत्ति णत्थि संदेहो ॥ १६७ ॥

अर्थ—यदि कृत्तिका नक्षत्रमें पानी बरसे तो अनाज की हानि होती है और यदि रोहिणीनक्षत्रमें पानी बरसे तो देशकी हानि होती है ॥ १६७ ॥

जइ मयसिरम्मि बरसइ तत्थ सुभिक्खत्ति होइ णायव्वो ।
अद्दाए चित्तलवो पुणव्वसे मास वरिसंति ॥ १६८ ॥

अर्थ—यदि मृगशिर नक्षत्रमें पानी बरसे तो अवश्य सुभिक्ष होगा। यदि आर्द्रा नक्षत्रमें बरसे तो खंडवृष्टि होगी, यदि पुनर्वसुनक्षत्रमें बरसे तो एक महीने तक वर्षा रहेगी

पुस्से वाउम्मासं सस्साणय उच्छहोइ संपत्ति। ति

असलेसे बहुउदयं सस्साण विणासणं होई॥ १६९॥

अर्थ—यदि पुष्यनक्षत्रमें बरसे तो श्रेष्ठ वर्षा होगी और अनाज अच्छा होगा, यदि अश्लेषामे बरसे तो अनाजको हानि होगी॥ १६९॥

मह फग्गुणी हि वरसइ खेम-सुभिक्ख हवेइ णायव्वं।

उत्तरफग्गुणि हत्थे खेम-सुभिक्ख वियाणाहि॥ १७०॥

अर्थ—यदि मघा और पूर्वा फाल्गुणीमें पानी बरसे तो कुशल और सुभिक्ष होता है, यदि उत्तरा फाल्गुणी और हस्त नक्षत्रमे पानी बरसे तो भी सुभिक्ष और आनंद होता है॥

र चित्ता हि मदवरिस साइहिमिह वइवादि परिखेऊ।

बहु वरिसं च विसाहा अणुहाहेणावि बहु वरिसं॥ १७१॥

अर्थ—यदि चित्रानक्षत्रमे पानी बरसे तो वर्षा मंद होगी, यदि स्वातीमे बरसे तो मामूली पानी पडेगा, यदि विशाखा और अनुराधा नक्षत्रमे पानी बरसे तो खूब पानी बरसेगा॥ १७१॥

जिट्ठिसु अण्णादिट्ठी मूलेणुदयं णिरतरं देइ।

तइ होइ बाइ वरिसं उत्तरपुव्वे ण सदेहो॥ १७२॥

अर्थ—यदि ज्येष्ठा नक्षत्रमे पानी बरसे तो पानीकी कमी रहेगी। यदि मूल नक्षत्रमे पानी बरसे तो पानी अच्छा गिरेगा। यदि पूर्वा और उत्तराषाढ नक्षत्रमे पानी बरसे तो

पुस्तक मिलनेके पते—

१ श्री कल्याण पॉवर प्रिंटिंग प्रेस, सोलापुर.

२ जैन बुकडेपो, मंगलवार पेठ, सोलापुर.

३ दि० जैन पुस्तकालय, सूरत.

Printed & Published by
V. P. Shastri, at his Kalyan Power Printing Press,
75 East Mangalwar Peth, Sholapur